

कचरे कहानी उसी की जुबानी

परिकल्पना: श्री आशीष जैन

सलाहकार: श्री अजय गर्ग

मुख्य संपादक: मीनाक्षी भारती

लेखन: दीपांशी गंधर्व, दीपांशु मोर्य, डेन्ज़िल बेसिल, प्रांजल, पल्लवी, सूजल जैन

फ़ोटोग्राफ़ी एवं चित्र: स्मॉल बॉक्स ऑफ़िस, भूपिंदर कुमार

कार्टून एवं चित्रांकन: आकृति जैन

डिज़ाइन: दीपांशु मोर्य एवं काजल

© 2026 Indian Pollution Control Association (IPCA).

All rights reserved. Some visual elements in this publication have been created or enhanced using AI tools for creative and illustrative purposes. AI-generated imagery is used to support visual storytelling and does not necessarily represent actual events, people, or locations.

पृष्ठभूमि

हर सफल कहानी की शुरुआत किसी साहसी इरादे से होती है। IPCA के 25 वर्षों की यह यात्रा भी उसी साहसी इरादे से शुरू हुई। उस इरादे के पीछे था एक सपना, भारत को स्वच्छ बनाने का। यह सपना किसी कॉन्फ्रेंस हॉल या सेमिनार से नहीं, बल्कि उन स्थानों से जन्मा जिन्हें दुनिया अक्सर नज़रअंदाज़ कर देती है, जैसे कूड़े के ढेरों से, बदबूदार नालों से, बहते गंदे पानी से, सड़ते कचरे की बदबू से, और उन तंग गलियों से, जिनसे अक्सर लोग मुँह फेरकर गुज़र जाते थे। IPCA ने उस अनदेखे रास्ते को चुना। एक ऐसे रास्ते को, जहाँ बदलाव धीरे-धीरे आता है, जागरूकता से, धैर्य से और लगातार किए गए छोटे-छोटे प्रयासों से, और वहीं से शुरू हुआ एक ऐसा सफर, जिसने 25 वर्षों में धीरे-धीरे इस सपने को हकीकत में बदलना शुरू किया। साल 2001 में जब IPCA की नींव रखी गई, तब पर्यावरण और कूड़ा प्रबंधन (Waste Management) चर्चा का विषय नहीं, बल्कि उपेक्षा का विषय था। लोग कचरे को “समस्या” मानते थे, उसके पीछे छिपे अवसर, जिम्मेदारी और मानवीय जुड़ाव को देखने की दृष्टि बहुत कम लोगों के पास थी। उस समय यह विश्वास करना भी कठिन था कि एक दिन “कचरा” राष्ट्रीय विमर्श का हिस्सा बनेगा, प्लास्टिक, ई-वेस्ट, बैटरी वेस्ट और गीले व सूखे कचरे पर नीतियाँ बनेंगी, कचरा केवल समस्या नहीं बल्कि संसाधन कहलाएगा और लोग अपने घरों में कचरे को अलग-अलग करना सीखेंगे। IPCA 25 वर्ष पूरे कर चुका है। इन 25 वर्षों में IPCA ने केवल परियोजनाएँ नहीं बनाई, बल्कि एक ऐसा तंत्र खड़ा किया जिसमें वेस्ट वर्कर्स, नागरिक, रीसाइक्लर्स, संस्थाएँ और नीति-निर्माता, सभी एक साझा उद्देश्य से जुड़े हैं, जहाँ कूड़े को समस्या नहीं बल्कि संसाधन के रूप में देखा जाता है। भारत भर में विकसित की गई विकेंद्रीकृत कचरा (गीला व सूखा) प्रबंधन प्रणालियाँ, स्थापित किए गए MRFs और रीसाइक्लिंग यूनिट्स, और 30,000 से अधिक वेस्ट वर्कर्स का नेटवर्क, यह सब इस बात का प्रमाण है कि परिवर्तन संभव है, यदि इरादा सच्चा हो।

वर्ष 2001 से 2026 तक अनेक चुनौतियाँ आईं, अनेक बदलाव आए, अनेक प्रोजेक्ट्स पर काम किया, पर्यावरण को बेहतर बनाने का हर संभव प्रयास किया, अनेक लोगों के जीवन पर अपनी छाप छोड़ी। और यह सब मुमकिन हुआ उस एक चीज़ की वजह से, जिसे लोग बेकार समझते थे: कूड़ा। लेकिन वह कूड़ा नहीं, खरा सोना है, जिसकी कीमत को IPCA ने समझा। यह किताब उसी कूड़े के कार्याकल्प पर आधारित है। यह किताब केवल आँकड़ों या उपलब्धियों की सूची नहीं है। यह उन भावनाओं की किताब है, जो अक्सर रिपोर्ट्स और प्रेजेंटेशन्स में जगह नहीं बना पातीं। यह उन आवाज़ों को सामने लाने का प्रयास है, जिन्हें हम हर दिन अपने आसपास देखते हैं, लेकिन सुनते नहीं, जैसे कि केले का छिलका, प्लास्टिक की बोतल, टूटा पैक, पुराने कपड़े आदि। वे चीज़ें, जिन्हें हम “कचरा” कहकर भुला देते हैं, उनकी अपनी एक यात्रा है, अपना संघर्ष है, और पुनर्जन्म की अपनी संभावना है। यह कॉफी टेबल बुक IPCA के 25 वर्षों की यात्रा का उत्सव है। उन लोगों का उत्सव, जिन्होंने बदलाव की संभावना पर विश्वास किया, और उस विश्वास का उत्सव, जिसने “बदनाम कूड़े” को “कीमती संसाधन” में बदलने का साहस दिखाया। 2001 में दिल्ली के विश्वास नगर, शाहदरा के एक कमरे के ऑफिस से शुरू हुआ IPCA, 25 वर्षों के निरंतर प्रयासों से आज अनेक नागरिकों, नगर निगमों और नीति-निर्माताओं का विश्वास जीत चुका है।

संस्थापक की कलम से

कभी-कभी मैं सोचता हूँ...

क्या कचरा सचमुच सिर्फ कचरा होता है?

या फिर वह हमारी आदतों, हमारी लापरवाही, हमारी जीवनशैली और हमारी सोच का आईना होता है?

पिछले 25 वर्षों में मैंने कचरे को बहुत करीब से देखा है। सड़कों पर बिखरा हुआ, नालों में बहता हुआ, पहाड़ों की तरह जमा होता हुआ... और कचरे के उन्हीं ढेरों के बीच मैंने उम्मीद को भी जन्म लेते देखा है। मैंने देखा है कि जब एक बच्चा पहली बार अपने घर में गीले और सूखे कचरे को अलग करना सीखता है, तो वह सिर्फ सफाई नहीं सीख रहा होता, वह जिम्मेदारी सीख रहा होता है। जब कोई व्यक्ति अपने घर के किचन वेस्ट से खाद बनाता है, तो वह सिर्फ कचरा कम नहीं कर रहा होता, वह प्रकृति के साथ अपना रिश्ता फिर से जोड़ रहा होता है। और जब कोई प्लास्टिक की बोतल रीसाइकल होकर दोबारा उपयोग में आती है, तो वह हमें यह याद दिलाती है कि हर अंत में एक नई शुरुआत छिपी होती है।

IPCA की यात्रा भी कुछ ऐसी ही रही है। यह यात्रा आसान नहीं थी। चुनौतियाँ थीं, संसाधनों की कमी थी, लोगों में उदासीनता थी। कई बार लगा कि बदलाव बहुत धीमा है। लेकिन हर छोटे कदम ने हमें आगे बढ़ना सिखाया। इस पुस्तक को बनाते समय हमने सिर्फ परियोजनाओं को नहीं देखा, हमने भावनाओं को महसूस किया। हमने सोचा, अगर यह “कचरा” बोल पाता, तो क्या कहता?

शायद वह अपनी उपेक्षा की कहानी सुनाता। शायद वह अपने पुनर्जन्म की कहानी सुनाता।

या शायद वह हमसे सिर्फ इतना कहता, “मुझे फेंको मत... मैं अंत नहीं, एक नई शुरुआत हूँ।”

इसी सोच से इस पुस्तक का जन्म हुआ। यह पुस्तक पारंपरिक सफलता गाथाओं से अलग है। यहाँ आँकड़ों से ज्यादा कहानियाँ हैं, रिपोर्ट्स से ज्यादा रिश्ते हैं, और उपलब्धियों से ज्यादा इंसानी एहसास हैं। इन पन्नों में आपको संघर्ष मिलेगा, संवेदना मिलेगी, मुस्कान मिलेगी और वह विश्वास मिलेगा कि बदलाव संभव है। एक केले का छिलका खाद बन सकता है, एक PET बोतल नई ज़िंदगी पा सकती है, चॉकलेट, बिस्कुट के रैपर्स स्कूल डेस्क में बदल सकते हैं और पुराने कपड़ों को रीसाइकल करके उत्तम क्वालिटी का कालीन बनाया जा सकता है। IPCA के 25 वर्षों की यह यात्रा केवल हमारी नहीं है, यह उन सभी लोगों की यात्रा है, जिन्होंने किसी न किसी रूप में इस परिवर्तन में योगदान दिया, जैसे कि वेस्ट वर्क्स, रीसाइक्लर्स, संस्थाएँ, छात्र, बच्चे, साथी संगठन, और हर वह नागरिक जिसने यह माना कि पृथ्वी सिर्फ हमारे उपयोग की वस्तु नहीं, बल्कि हमारी जिम्मेदारी है। इस पुस्तक के हर पन्ने में IPCA के अनुभव, संघर्ष और जीत की झलक है। उम्मीद है, जब आप इसे पढ़ेंगे, तो आपको सिर्फ कहानियाँ नहीं, बल्कि बदलाव की एक जीवंत यात्रा महसूस होगी।



श्री आशीष जैन

संस्थापक,
इंडियन पॉल्यूशन कंट्रोल एसोसिएशन

परिचय

साल 2001 में आईपीसीए ने कचरा प्रबंधन से अपना काम शुरू किया। फिर लोगों को जागरूक करने की मुहिम चली। आगे बढ़ते हुए यह संस्था एक थिंक टैंक बनी, जहाँ से नीतियों और समाधानों पर सोच निकली। और आज, 25 साल बाद, आईपीसीए बदलाव लाने वाली एक ताकत बन चुकी है, एक इम्पैक्ट क्रिएटर। प्लास्टिक कचरे के प्रबंधन के लिए यह केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (CPCB) में दर्ज है। साल 2016 में देश की पहली EPR कार्ययोजना भी IPCA ने सरकार के सामने रखी थी। पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (MoEFCC), CPCB तथा कई राज्य सरकारों द्वारा बनाई गई ज़रूरी समितियों में यह लगातार शामिल है और चंडीगढ़ प्रदूषण नियंत्रण समिति (CPCC) के साथ PRO के तौर पर पंजीकृत है।

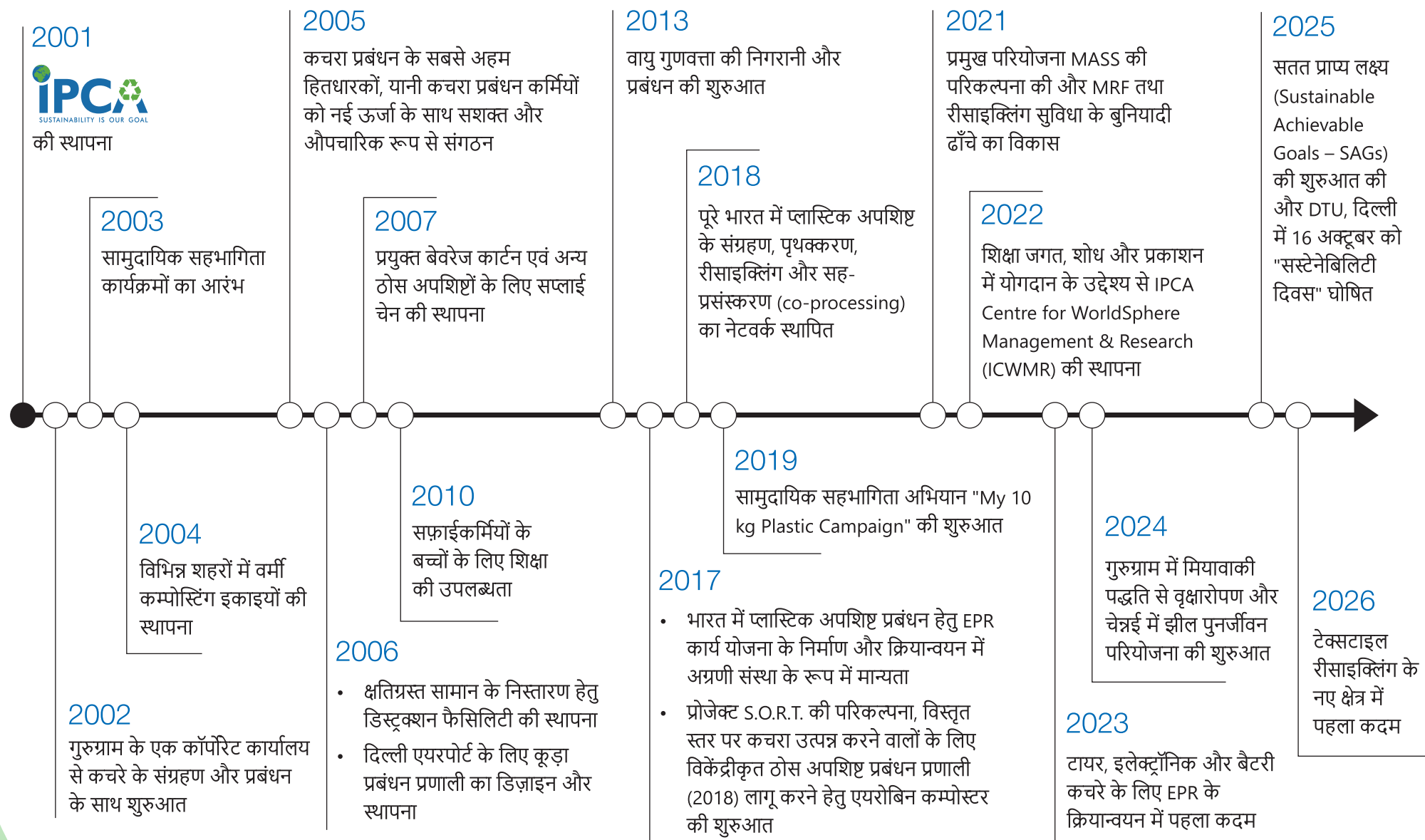
दिल्ली नगर निगम (MCD) की सिटी लेवल टास्क फोर्स में यह विशेषज्ञ सदस्य है, और ग्रेटर नोएडा औद्योगिक विकास प्राधिकरण (GNIDA) के लिए कचरे के स्थानीय स्तर पर निपटान में उसकी चुनी हुई साझेदार भी है। सरकारी संस्थाओं को आईपीसीए से तकनीकी समझ भी मिलती है और ज़मीन पर काम करने का तजुर्बा भी। शहरों का ठोस कचरा इकट्ठा करने, उसे अलग करने और दोबारा इस्तेमाल लायक बनाने से जो सिलसिला शुरू हुआ था, वह 25 सालों में हवा, धरती और पानी, तीनों के संरक्षण से जुड़े एक व्यापक और बहुआयामी काम में बदल गया है।

इस पूरे सफ़र के पीछे एक मज़बूत ढांचा खड़ा है, आईपीसीए ने दिल्ली-एनसीआर, पटियाला, असम और जम्मू में सात मटेरियल रिकवरी फैसिलिटी (MRF) विकसित की हैं, जहाँ कचरे को इकट्ठा करके अलग किया जाता है और रीसाइक्लिंग के लिए भेजा जाता है। इसके साथ ही ग्रेटर नोएडा, पटियाला जम्मू और चेन्नई में रीसाइक्लिंग यूनिटें भी स्थापित की हैं, जहाँ हर महीने 2,500 मीट्रिक टन से ज़्यादा प्लास्टिक कचरे को प्रोसेस करने की क्षमता है। आईपीसीए ने 33 राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों में 30,000 से ज़्यादा कचरा कर्मियों को एक साथ जोड़ा है और उन्हें पहचान दिलाई है। ये वही लोग हैं जो रोज़ कचरे के बीच रहकर काम करते हैं, और अब उन्हें सम्मान, पहचान और रोज़ी-रोटी का भरोसा मिला है।

संस्था विभिन्न कचरा उत्पादकों (वेस्ट जनरेटर्स) के लिए विकेंद्रीकृत ठोस कचरा प्रबंधन व्यवस्थाएँ लागू करती है। इनमें स्रोत पर ही गीले और सूखे कचरे को अलग करने पर ज़ोर दिया जाता है और उसका वैज्ञानिक ढंग से उपचार किया जाता है। टेरी स्कूल ऑफ़ एडवांस्ड स्टडीज़ (TERI SAS) में स्थित, IPCA की शैक्षणिक शाखा, IPCA सेंटर फॉर वर्ल्डस्फीयर्स मैनेजमेंट रिसर्च (ICWMR) पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में शोध और नवाचार लाता है।

हमारी 25 वर्षों की सतत यात्रा

सतत भारत की ओर, हर वर्ष एक कदम



इस कचरे की कीमत
तुम क्या जानों रमेश बाबू !







बदनाम केले का छिलका

मैं एक साधारण केले का छिलका हूँ। लोग मेरे अंदर का फल खाकर मुझे ऐसे फेंक देते हैं, जैसे मैं बेकार हूँ। हँसी तो तब आती है जब वही लोग मुझ पर पैर रखकर फिसलकर गिर पड़ते हैं, हा हा हा हा! और फिर बाद में मुझे ही कोसते हैं। इसमें भला मेरी क्या गलती है? मुझे सड़क पर फेंका है, तो भुगतो!

फिर एक दिन IPCA ने एक जागरूकता बैठक का आयोजन किया, जिसमें मेरे जैसे अन्य फल-सब्जियों के छिलकों (गीले कूड़े) से खाद बनाने की विधि समझाई गई। IPCA अपने साथ एरोबिन नामक एक यंत्र भी लेकर आई। मैंने एरोबिन के पास एक बड़ा-सा बोर्ड लगा देखा, जिस पर IPCA के साथ स्वर्ण लता मदरसन ट्रस्ट का नाम भी लिखा था।



उस दिन से मेरी ज़िंदगी ही बदल गई। जो लोग मुझे बेकार समझकर फेंक देते थे, वही अब मुझे इकट्ठा करने लगे। वहीं मेरी मुलाकात चायपत्ती और सूखी पत्तियों से हुई। फिर हमें उस एरोबिन में डाला गया और देखते ही देखते 45 दिनों में मैं 'बदनाम कूड़े' से 'कीमती कंपोस्ट' बन गया।

अब मैं मिट्टी को ताकत दे रहा हूँ। अब कोई मुझ पर फिसलता नहीं, बल्कि मेरी वजह से फल-फूल खिलते देखकर लोग मुस्कुराते हैं।

मेरी सूरत और मेरी मंज़िल बदलने के लिए मैं IPCA और स्वर्ण लता मदरसन ट्रस्ट का हृदय से आभारी हूँ।





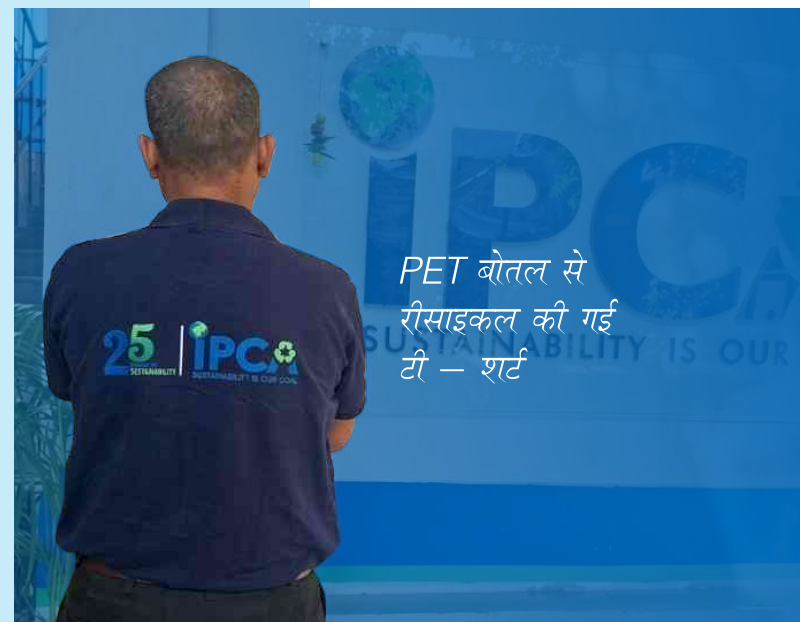
PET भाई की कहानी

मैं हूँ PET भाई, हल्का, मजबूत और हर किसी के काम आने वाला। मेरा जन्म 1970 के दशक में ड्यूपॉन्ट (DuPont) जैसे बड़े घराने में हुआ। पानी हो या कोल्ड ड्रिंक, हर तरल चीज़ के साथ मेरी खूब जमती थी। मेरी मजबूती, हल्कापन और नमी से बेफिक्री ने मुझे जल्द ही घर-घर का चहेता बना दिया। लेकिन जैसे-जैसे मेरी लोकप्रियता बढ़ी, मेरे जैसे लाखों भाई बाजार में आ गए। इस्तेमाल के बाद लोग हमें भूलने लगे और जो PET कभी शान से घरों में आता था, वही सड़कों और कचरे के ढेरों में लावारिस पड़ा मिलने लगा। मेरी यह हालत IPCA से देखी नहीं गई। उन्होंने ठाना कि PET भाई को कचरे में नहीं, उसकी सही जगह पहुँचाया जाएगा।



फिर Bisleri International Private Limited के साथ शुरू हुआ "Bottles for Change" का सफर। इस पहल के तहत घर-घर, दुकानों और स्कूलों में जाकर लोगों को जागरूक किया गया कि मेरी तरह PET बोतलों और अन्य सभी प्लास्टिक कचरे को स्रोत पर ही अलग करके रखा जाए। इन स्थानों पर मेरे और दूसरे प्लास्टिक कचरे को इकट्ठा करने के लिए कलेक्शन बिन लगाए गए। अलग-अलग स्थानों पर एकत्र किए गए मुझे और अन्य प्लास्टिक कचरे को उठाने के लिए विशेष प्लास्टिक कलेक्शन वाहन भेजे गए। इसके बाद मुझे और मेरे जैसे अन्य प्लास्टिक कचरे को रीसाइक्लर्स (Recyclers) तक पहुँचाया गया, जहाँ मुझे एक नई ज़िंदगी मिली।

आज मैं रीसायकल होकर सिर्फ बोतल ही नहीं, बल्कि Clothing & Fabrics, Carpets & Rugs, Home Furnishings, New Bottles & Packaging जैसी कई उपयोगी चीज़ों में बदला जाता हूँ।



PET बोतल से
रीसाइकल की गई
टी - शर्ट







लापता रैपर्स

मैं लापता रैपर्स, यानी की Multi-Layered Plastic (MLP) Waste, आसान भाषा में टॉफी, चॉकलेट, बिस्किट और कुरकुरे की रंग-बिरंगी पन्नी। बच्चों की पसंद तो मैं खूब थी, लेकिन मेरा इस्तेमाल होते ही मेरी कहानी खत्म समझ ली जाती थी। करीब एक दशक पहले तक मैं सड़कों, गलियों, नालियों और नदी-नालों में लावारिस पड़ी मिलती थी। लोग मेरे ऊपर से गुजर जाते, हवा मुझे नाली में पहुँचा देती और मैं सोचती, जब यहाँ आ ही गई हूँ, तो नाली जाम करके थोड़ी baddie बन जाऊँ! लेकिन सच कहूँ तो अंदर से मैं saddie ही थी। मेरी वजह से सफाई व्यवस्था और जल निकासी दोनों परेशान थे। मेरे परिवार के दूसरे प्लास्टिक सदस्यों की तरह मेरी भी कोई आसान recycling value नहीं थी। तभी IPCA ने मुझे देखा, अपनाया और मुझमें छिपी value को पहचाना। मेरे लिए collection और recycling का पूरा mechanism तैयार किया गया और मुझे फिर से एक नई पहचान मिली।

आज IPCA की recycling facility में मुझे recycle करके कुर्सी, टेबल, बेंच, स्कूल डेस्क, ऑफिस कैबिनेट जैसी कई उपयोगी चीज़ों में बदला जाता है। यानी मेरी नई ज़िंदगी न सिर्फ कचरा कम करती है, बल्कि लकड़ी की जरूरत और पेड़ों की कटाई को भी कम करने में मदद करती है। आज मैं सड़कों पर लावारिस नहीं मिलती। पड़ोस के पार्क में जो बेंच आपको दिख रही है... हो सकता है, वो मैं ही हूँ! कभी मैं थी लापता टॉफी की पन्नी, आज IPCA की बदौलत मेरे चार पते हैं और मेरे पीछे खरीदारों की लाइन है। आज मैं सड़कों पर लावारिस नहीं मिलती। पार्क की बेंच हो या कुर्सी, टेबल, स्कूल डेस्क, ऑफिस कैबिनेट और ऐसी ही कई रोज़मर्रा की उपयोगी चीज़ों में, आज मैं ही अपना नया रूप लेकर आपके सामने हूँ!







स्वच्छता सखी की खामोश लड़ाई

मैं स्वच्छता सखी हूँ, सैनिटरी वेस्ट और डायपर की दुनिया की नुमाइंदा। मेरा विषय ऐसा है जिस पर लोग खुलकर बात नहीं करते, शर्मा जाते हैं, चुप्पी साध लेते हैं। पर चुप्पी से समस्या खत्म नहीं होती, बढ़ती है। हर दिन लाखों की तादाद में मुझे जैसा कचरा घरों से निकलता है, और अक्सर आम गीले-सूखे कचरे के साथ ही फेंक दिया जाता है, जिससे सफ़ाईकर्मियों की सेहत को सीधा ख़तरा होता है। मैं बायोडिग्रेडेबल नहीं होती, सालों तक ज़मीन में पड़ी रहती हूँ।



नियो – सैन
द्वारा शोधित
एवं निर्मित
इन्सिनरेटर मशीन



IPCA ने इस "अनदेखी" समस्या पर खुलकर बात करने की हिम्मत दिखाई, सोसाइटियों में जागरूकता कार्यक्रमों के ज़रिए महिलाओं और परिवारों को समझाया कि मुझे अखबार में लपेटकर, अलग बैग में, "सैनिटरी वेस्ट" लिखकर अलग रखा जाए ताकि सफ़ाईकर्मों सुरक्षित रहें। और मेरी यात्रा का आखिरी पड़ाव किसी रीसाइक्लिंग यूनिट में नहीं, इन्सिनरेटर मशीन में होता है। मुझे बस पूरी तरह, सुरक्षित तरीके से जल जाना है। वहाँ मुझे नियंत्रित तापमान पर सुरक्षित तरीके से जलाया जाता है। और यहीं मेरी कहानी अपने असली मक़सद तक पहुंचती है। मैं कोई शर्म की बात नहीं, ज़िम्मेदारी की बात हूँ। जिस दिन हर घर मुझे अलग रखना सीख जाएगा, उस दिन कोई सफ़ाईकर्मों मेरी वजह से बीमार नहीं होगा, और मेरी राख का हर कण यह याद दिलाएगी कि ख़त्म होना भी कभी-कभी एक जीत हो सकता है।





मिलावट मुब्बा की चार आफ़तें (बच्चे)



हम चार भाई-बहन हैं, एक ही घर से निकलते हैं, पर हमारी फ़ितरत बिल्कुल अलग-अलग है। लोग अक्सर हमें एक ही थैले में डालकर "कचरा" कह देते हैं, पर सच यह है कि हम चारों को अलग-अलग सँभाला जाए, तभी हममें से किसी का भला हो पाता है। मैं सबसे बड़ा हूँ; **गीला कचरा**। रसोई से निकलने वाला हर बचा-खुचा टुकड़ा, सब्ज़ी के छिलके, बचा हुआ खाना, फूल-पत्तियाँ, यह सब मैं हूँ। मुझे सड़ना ही है, पर सही तरीके से सड़ूँ तो मैं खाद बनकर मिट्टी को फिर से ज़िंदा कर देता हूँ। मैं दूसरा हूँ; **सूखा कचरा**। कागज़, प्लास्टिक, धातु, काँच, जो कुछ भी सड़ता नहीं, वह मैं हूँ। मुझे सड़ने की ज़रूरत नहीं, मुझे बस दोबारा इस्तेमाल होने का मौक़ा चाहिए। मैं तीसरी हूँ; **सैनिटरी कचरा**। सैनिटरी पैड्स, डायपर जैसी चीज़ें मुझमें आती हैं। मुझे न गीले के साथ मिलाया जाना चाहिए, न सूखे के साथ, मुझे एक अलग, ढका हुआ पैकेट चाहिए, क्योंकि मेरी अनदेखी सीधे किसी सफ़ाईकर्मी की सेहत पर असर डालती है। और मैं सबसे छोटा, पर सबसे ख़तरनाक; **स्पेशल केयर कचरा**। घर में इस्तेमाल होने वाली एक्सपायर्ड दवाइयाँ, पुरानी बैटरियाँ, इस्तेमाल किए गए ब्लेड, टूटे थर्मामीटर, यह सब मैं हूँ। दिखने में मामूली, पर लापरवाही से फेंका जाऊँ तो किसी की जान को ख़तरा बन सकता हूँ। बरसों तक हम चारों एक ही थैले में साथ रहे, और साथ रहकर सिर्फ़ मुसीबत बनते रहे।



फिर IPCA की टीम गली-मोहल्लों में सेग्रीगेशन ड्राइव्स लेकर पहुंचीं, घर-घर जाकर समझाया गया कि हम चारों अलग-अलग हैं, इसलिए अलग-अलग डिब्बों के हक़दार भी हैं। धीरे-धीरे लोगों ने सीखा, हरा डिब्बा गीले के लिए, नीला सूखे के लिए, सैनिटरी के लिए लाल, और स्पेशल केयर के लिए काल डिब्बा।

जिस दिन से ये चार रास्ते हमें मिले, उसी दिन से हम चारों ने अपनी असली पहचान पाई। मैं खाद बनकर मिट्टी में लौट आया, मेरा सूखा भाई नई शकल पाकर दोबारा बाज़ार में पहुंचा, सैनिटरी बहन सुरक्षित तरीके से नष्ट हुई, और स्पेशल केयर भाई बिना किसी को नुकसान पहुंचाए अपने ठिकाने तक पहुंचा। हम अलग-अलग हैं, इसीलिए ज़रूरी हैं। हमें एक थैले में मत बांधिए, हमें चार रास्ते दीजिए, और हम चारों अपनी-अपनी मंज़िल खुद तय कर लेंगे।







गटर से झील तक

मैं वो पानी हूँ, जो कभी आपके नल से साफ़-सुथरा निकला था, और आज एक गटर के नाम से जाना जाता हूँ। लोग सोचते हैं गंदा पानी बस "बह जाना" चाहिए, कहीं भी, किसी भी नदी या तालाब में, यह सोचे बिना कि वही पानी आगे किसी और के इस्तेमाल में आता है।

मुझमें साबुन, तेल, केमिकल्स और न जाने क्या-क्या घुल जाता है, और जब मैं बिना ट्रीट हुए नदियों में मिलता हूँ, तो मछलियाँ मरती हैं, पानी बदबूदार होता है, और वही पानी दोबारा किसी के पीने के पानी में मिल सकता है। लेकिन मेरी कहानी सिर्फ़ गंदगी और प्रदूषण की नहीं है। इसमें बदलाव की उम्मीद भी है।



IPCA, Kia India, Coca-Cola और SBI Card जैसे अपने सहयोगियों के साथ मिलकर नदियों, तालाबों और समुद्र तटों की सफ़ाई के लिए कई अभियान चला रहा है। इन अभियानों के ज़रिए मेरे किनारों पर फैले कचरे को हटाया जाता है, लोगों को जलस्रोतों को स्वच्छ रखने के प्रति जागरूक किया जाता है और एकत्रित कचरे को अधिकृत रीसाइक्लिंग के लिए भेजा जाता है। जब मेरे किनारों से कचरा हटता है, लोगों की सोच बदलती है और मुझमें फिर से जान लौटने लगती है। ये प्रयास सिर्फ़ सफ़ाई तक सीमित नहीं हैं, बल्कि नदियों, तालाबों और समुद्र को प्रदूषण से बचाने और उनमें जीवन को सुरक्षित रखने की एक कोशिश हैं।

मैं गंदा ज़रूर हो जाता हूँ, पर हमेशा के लिए नहीं। मुझे बस थोड़ा सा साथ और सफ़ाई चाहिए, बाकी बहना मुझे आता है।



एव चाट सेंटर

पकोड़ा एव कचोड़ी

CHAAT CENTER

			
Pani Puri	Dahi Puri	Bhel Puri	Golgappa



वृद्धादान
कूड़ा मत फैलाओ





छोटी सी स्ट्रॉ, बड़ी सी ज़िद

मैं छोटी-सी स्ट्रॉ हूँ, छोटी, पतली, बस कुछ मिनटों के लिए इस्तेमाल होने वाली। मेरे साथ मेरे भाई-बहन भी हैं, डिस्पोज़ेबल कप, प्लेट, कटलरी, कैरी बैग। हम सबकी उम्र बहुत छोटी है, इस्तेमाल पाँच मिनट का, पर धरती पर हमारा बोझ सैकड़ों साल का। लोग हमें पार्टी की शान समझते, फोटो में हमारे साथ मुस्कुराते, और फिर अगले ही पल हमें कूड़ेदान तक पहुँचाने की ज़हमत भी नहीं उठाते, सीधा ज़मीन पर! हम इतने हल्के और छोटे होते हैं कि नालों में फँसकर पानी का रास्ता रोक देते हैं, या समंदर तक पहुँचकर मछलियों की जान के दुश्मन बन जाते हैं।



2022 में जब सरकार ने सिंगल यूज़ प्लास्टिक (Single Use Plastic) पर पाबंदी लगाई, तभी IPCA ने भी अपनी मुहिम तेज़ की, लोगों को कपड़े के थैले, स्टील के स्ट्रॉ, और बांस से बने विकल्पों के लिए जागरूक किया। जो हम बाज़ार में अब भी मिल जाते हैं, उन्हें भी सही सेग्रीगेशन के ज़रिए इकट्ठा करके रीसाइक्लिंग की तरफ़ मोड़ा गया। मेरी कहानी बाकियों से थोड़ी अलग है, मेरी असली जीत रीसाइकल होने में नहीं, बल्कि इस्तेमाल ही न होने में है। जिस दिन आप मुझे मना कर दें, उसी दिन मेरी सबसे बड़ी सफलता होगी।





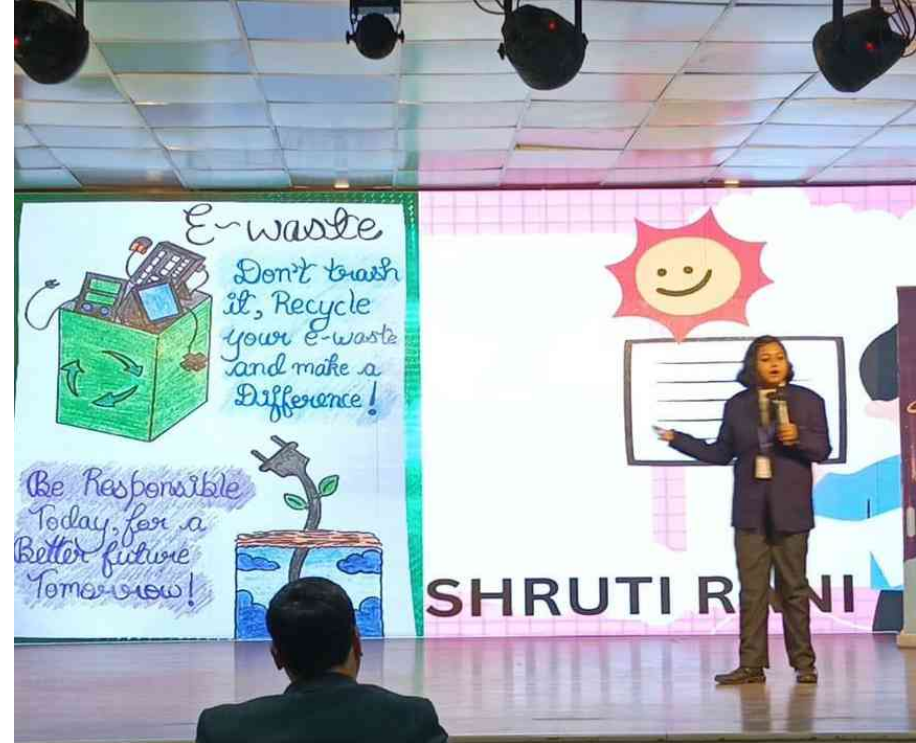
सर्किट सुपरस्टार की सिलिकॉन कहानी

नमस्ते! मैं हूँ सर्किट सुपरस्टार, कभी आपका पुराना मोबाइल, कभी टूटा हुआ लैपटॉप, कभी खराब पड़ा मिक्सर या वो पंखा जो अब घूमता नहीं। मेरे अंदर सोना, चाँदी, कॉपर जैसी कीमती धातुएं छुपी होती हैं, पर साथ ही लेड और मरकरी जैसे खतरनाक तत्व भी। मैं दुनिया का सबसे तेज़ी से बढ़ने वाला कचरा हूँ, फिर भी सबसे कम समझा जाने वाला। लोग मुझे दरारों में सालों तक भूला पड़ा रहने देते, या फिर कबाड़ी को कौड़ियों के दाम बेच देते, जहाँ मुझे असुरक्षित तरीके से तोड़ा जाता, जिससे सफाईकर्मियों की सेहत को भारी खतरा होता।

फिर IPCA ने मुझे सही रास्ता दिखाया। ams OSRAM के साथ मिलकर सोसाइटियों और दफ्तरों में e-waste awareness drives चलाई गईं, ताकि लोग मुझे कबाड़ी के हवाले करने की बजाय सही जगह पहुंचाना सीखें। वहाँ से मुझे बाक़ी कचरे से अलग इकट्ठा करके अधिकृत recyclers तक भेजा गया, जहाँ वैज्ञानिक तरीके से मुझसे कीमती धातुएं निकाली गईं और

खतरनाक हिस्सों को सुरक्षित तरीके से नष्ट किया गया। और वहीं मेरा असली पुनर्जन्म होता है। पुरानी चिप्स फिर से काम करने लायक बन जाती हैं, और मैं मरम्मत होकर दोबारा तैयार हो जाता हूँ

मेरा सोना और दूसरी कीमती धातुएँ निकालकर फिर से इस्तेमाल में लाई जाती हैं, और प्लास्टिक नई चीज़ों में ढल जाता है। मैं ई-वेस्ट नहीं, ई-वेल्थ हूँ!

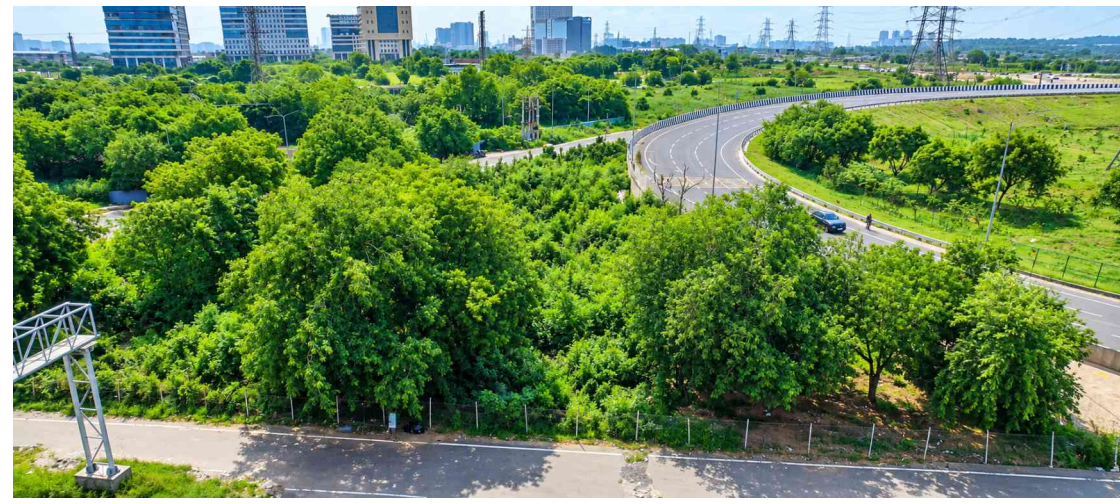






बसंती हवा की हांफ़ती कहानी

बचपन में आप सबने केदारनाथ अग्रवाल की वह मशहूर कविता ज़रूर पढ़ी या सुनी होगी, जिसमें बसंती हवा खुद अपना परिचय देती है, खिलखिलाती, इतराती, फूलों संग अठखेलियाँ करती हुई। वही हवा थी जो कभी हर सुबह आपके आंगन से गुज़रती थी। मैं वही बसंती हवा हूँ, वही हवा जिसमें आप हर सांस लेते हैं, बिना देखे, बिना सोचे।



कभी मैं भी उस कविता जैसी थी, साफ़, ताज़ी, मीठी, पेड़ों से गुज़रती, फूलों की खुशबू लाती। पर धीरे-धीरे गाड़ियों का धुआं, फ़ैक्ट्रियों की चिमनियाँ, पराली जलाना, और खुले में कचरा जलाना, इन सबने मिलकर मुझे इतना प्रदूषित कर दिया कि अब हर सर्दी में मुझमें साँस लेना मुश्किल हो जाता है। बसंती हवा अब कहीं खो-सी गई है। सबसे दुख की बात यह है कि लोग मुझे "मौसम" समझ लेते हैं, जैसे यह कोहरा है, अपने आप छूट जाएगा। पर हकीकत में यह मेरी ही तकलीफ़ है, जो हर साँस के साथ लोगों के फेफड़ों तक पहुँच रही है।

फिर एक दिन मेरे इलाके में कुछ अलग होने लगा। IPCA ने Concentrix के सहयोग से गुरुग्राम के खेरकी दौला प्लाईओवर के आस-पास मियावाकी (Miyawaki) पद्धति से पौधरोपण शुरू किया। ऐसा घनापन मैंने पहले कभी अपने इलाके में नहीं देखा था। तरह-तरह के पौधे साथ-साथ, इतने पास-पास बोए गए कि लगा जैसे कोई छोटा-सा जंगल उग आया हो। फिर शुरू हुआ खाद-पानी का एक लगातार सिलसिला, महीनों तक, बिना थके। आज उसी जगह से गुज़रिए तो फ़र्क़ खुद बोल उठता है। हरियाली इतनी घनी कि तितलियाँ इधर-उधर मंडराती नज़र आती हैं, पेड़ों पर पक्षियों का बसेरा बन गया है, और सुबह-सुबह कोयल की आवाज़ अब वहाँ की पहचान बन चुकी है, पंछी चहचहाते हैं, जैसे मुझे भी जवाब दे रहे हों। तापमान में भी 5 से 10 डिग्री तक की गिरावट महसूस होती है, जो किसी और हिस्से में मुश्किल से मिलेगी। पिछले दिनों कुछ बच्चे और कुछ विशेषज्ञ एक मशीन लेकर वहाँ पहुँचे और हवा को नापने लगे। उस मशीन ने वह बता दिया जो मैं खुद महसूस कर रही थी, मेरा AQI अब बेहतर हो चुका है। गुरुग्राम के बाक़ी हिस्सों के मुकाबले वहाँ का AQI कम न हो, तो बताना। मैं कोई ऐसी चीज़ नहीं जिसे "रीसाइकल" किया जा सके, मुझे बस बचाया जा सकता है, संभाला जा सकता है, हर उस आदत को बदलकर, जो मुझे गंदा करती है। जिस दिन आप कचरा जलाने की बजाय उसे सही जगह पहुँचाएंगे, उसी दिन मैं फिर से उसी बसंती हवा की तरह आज़ादी से साँस ले पाऊँगी, और आप भी।







कहानी कपड़ा मास्टर जी की

नमस्ते जी, मैं हूँ कपड़ा मास्टर जी, सबकी पसंद और अलमारी की शान। मेरा परिवार बहुत बड़ा है। खदर चाचा (खादी) और बंगाली सिल्क मौसी से लेकर मेरे विदेशी रिश्तेदार लिनेन ली (Linen Lee) और पॉली (Polyester) तक, हम हर रंग-रूप में आते हैं। पहले हमारा मूल उद्देश्य सिर्फ शरीर को ढकना था, लेकिन समय के साथ हम विकसित हुए और किसी हद तक स्टेटस सिंबल बन गए। पहले हम रोटी, कपड़ा और मकान जैसी बुनियादी ज़रूरतों में शामिल थे, लेकिन अब हम उपभोग और अतिउपभोग का एक हिस्सा बन गए हैं। शॉपिंग मॉल्स में हम अर्श पर रहते थे। ज़माना बदल गया है। पुराने समय में लोग मुझे सालों-साल प्यार से पहनते थे। पहले बड़े भाई की बारी, फिर छोटे भाई की, और जब मैं थक जाता, तो पोंछा (सफाई का कपड़ा) बनकर घर की सेवा करता। पर आज? यह 'फास्ट फैशन' का चक्कर मुझे समझ नहीं आता! लोग मुझे 'अरे! यह तो पुराना हो गया' कहकर बहुत जल्दी छोड़ देते हैं। मैं नया का नया ही अटाकामा रेगिस्तान (Atacama Desert) जैसे कचरे के ढेरों में अपने दोस्तों के साथ पड़ा-पड़ा रोता रहता हूँ।

लेकिन अच्छी खबर यह है कि अब IPCA और SBI Card एक CSR पहल के साथ आए हैं! वे चेन्नई में एक ऐसी रीसाइक्लिंग यूनिट लगा रहे हैं, जहाँ पुराने, फेंक दिए गए कपड़ों को नया रूप मिलेगा। इस रीसाइक्लिंग प्लांट में मैं फर्श के कारपेट जैसी चीज़ों में बदल दिया जाऊँगा और दोबारा नई-नई जगहों पर जाया करूँगा। यह देश में एक बहुत बड़ा कदम है! इसका मतलब है, अब घर से बेघर होने के बाद भी, मुझे फिर से एक नया घर और एक नया परिवार मिलेगा। मैं कचरे में नहीं, फिर से आपके जीवन का हिस्सा बनकर सालों-साल जीऊँगा! तो ये थी मेरी कहानी, अर्श से फर्श तक की। मुझे सिर्फ खरीदना नहीं, संवारना भी सीखो।







शीशा शायर की शफ़ाफ़ियत

टूटना एक बात है, बिखर जाना बिल्कुल दूसरी। यह फ़र्क मुझसे बेहतर शायद ही कोई समझाए। लोग मुझे शीशा शायर कहते हैं, कभी अचार की बरनी, कभी कोल्ड ड्रिंक की बोतल, तो कभी टूटी हुई खिड़की का टुकड़ा। मेरी सबसे बड़ी खूबी है मेरी पारदर्शिता, मैं जो हूँ, वही दिखता हूँ, कोई छुपाव नहीं। पर यही पारदर्शिता कई बार मेरी दुश्मन बन जाती है: टूटता हूँ तो नुकीला हो जाता हूँ, और लापरवाही से फेंका जाऊँ तो किसी सफ़ाईकर्मी के हाथ या किसी जानवर के पैर को घायल कर सकता हूँ। लोग मुझे प्लास्टिक जितनी गंभीरता से नहीं लेते, क्योंकि मैं तो बस रेत और सोडा से बना एक "प्राकृतिक" टुकड़ा हूँ। पर प्राकृतिक होने का मतलब बेपरवाह होना नहीं।



रीसायकल की गई काँच की बोतलें

फिर हर जगह एक हलचल शुरू हुई। IPCA की टीम ने गली-मोहल्लों में सेग्रीगेशन ड्राइव्स करके लोगों को समझाया कि गीला-सूखा अलग रहे, और सूखे में भी काँच के लिए एक अलग, सावधान कोना हो। धीरे-धीरे लोगों ने सीखा, टूटा शीशा अखबार में लपेटो, ऊपर "काँच का सामान" लिख दो, ताकि जो हाथ मुझे उठाए, वो सुरक्षित रहे। वहाँ से मैं एक अलग रास्ते पर चला, सीधा MRF तक, जहाँ IPCA द्वारा प्रशिक्षित वेस्ट वर्कर्स मुझे बड़ी सावधानी और पेशेवर तरीक़े से संभालते, फिर अधिकृत recyclers तक पहुँचाते। वहीं भट्टी में मैं पिघला, और फिर से बोतल, बरनी, या किसी नई शक्ल में ढलकर लौट आया, और सबसे खास बात, मैं जितनी बार चाहूँ उतनी बार पिघल सकता हूँ, बिना अपनी चमक खोए। शीशा टूटता ज़रूर है, पर हारता कभी नहीं। और अगर आप में से किसी का भी दिल टूटा हो या कभी टूटे, तो मुझसे एक बात सीख लेना: टूटना अंत नहीं है।





कागज़ काका की किताब

एक पेड़ था, जिसकी लकड़ी से मैं जन्मा। उसकी उम्र मुझमें उतरी, और मैं निकल पड़ा दुनिया देखने, कभी अखबार की सुर्खी बनकर, कभी बच्चों की कॉपी, कभी दफ़्तर की फ़ाइल, तो कभी किसी पैकेट का डिब्बा। लोग मुझे कागज़ काका कहते हैं, पर असल में मैं उस पेड़ का सबसे छोटा, सबसे बिखरा हुआ हिस्सा हूँ।



बरसों वो पेड़ धूप-छाँव सहता रहा, सबको साफ़ हवा देता रहा और बिना किसी स्वार्थ के अपना काम करता रहा। फिर एक दिन उसे काट दिया गया, मुझे बनाने के लिए। पर जिस मेहनत से मैं बना, उसकी कद्र किसी ने नहीं की। "एक तरफ़ लिखा है" कहकर मुझे उठाकर फेंक दिया गया, घरों में मैं बरसों धूल खाता रहा, और सबसे बुरा तब हुआ जब मुझे गीले कचरे के साथ मिला दिया गया। जिस पल मैं भीगा, उसी पल मेरे दोबारा जन्म की उम्मीद भी बुझ गई।

पर हर ख़त का एक जवाब होता है। जगह-जगह वेस्ट सेग्रीगेशन ड्राइव्स के ज़रिए लोगों को यह याद दिलाया गया कि गीला और सूखा अलग रहना चाहिए, और सूखे में भी मेरे जैसों के लिए एक अलग कोना होना चाहिए। धीरे-धीरे लोग समझने लगे, मुझे सिर्फ़ "कागज़" कहकर आम कचरे में मिलाना नहीं, अलग रखकर एक नई ज़िंदगी का मौक़ा देना है।



रीसायकल किए गए कागज़ से बने डायरी और पेन

एक किस्सा तो मुझे आज भी गर्व से याद है। इंटीग्रेटेड हेडकार्टर्स ऑफ़ मिनिस्ट्री ऑफ़ डिफेंस (आर्मी) कैंप, दिल्ली कैंट ने IPCA से हाथ मिलाया, और अपने बरसों पुराने कागज़ात, फ़ाइलें, रिकॉर्ड्स, न जाने कितनी पुरानी इबारतें, छोटे-छोटे टुकड़ों में काटकर सौंप दिए। यह कोई मामूली विदाई नहीं थी, यह एक सम्मान था। बदले में IPCA ने वैल्यू एक्सचेंज प्रोग्राम के तहत उन्हें ताज़े कागज़ की रीम्स लौटाई, जैसे कोई पुरानी पीढ़ी अपनी जगह नई पीढ़ी को सौंप रही हो। वहाँ से मेरे टुकड़े अधिकृत recyclers तक पहुंचे, गूदा बनकर घुले, और फिर धागे-धागे जुड़कर एक नई शक्ल में ढले, कभी नई कॉपी, कभी नया लिफ़ाफ़ा, कभी कोई पैकेजिंग बॉक्स। तो प्यारे पेड़, मैं तुम्हें बताना चाहता हूँ, तुम्हारी कुर्बानी बेकार नहीं गई। हर बार जब मैं दोबारा जन्म लेता हूँ, तुम्हारी जगह किसी और पेड़ को नहीं कटना पड़ता। मेरी हर नई ज़िंदगी, कहीं दूर खड़े किसी और पेड़ की एक और साल की उम्र है। इसलिए अगली बार जब कोई मुझे फेंकने से पहले एक पल रुके, समझ लेना, वो तुम्हें याद कर रहा है।







मेटल कबाड़ी का कमाल

मैं हूँ मेटल कबाड़ी। पुराना डिब्बा, टूटा हुआ नल, जंग खाई कील, या रसोई की वो कढ़ाई जिसे "अब काम की नहीं" कहकर कोने में पटक दिया गया। पर सच बताऊँ? मैं कभी मरता नहीं। मेटल की यही सबसे बड़ी शरारत है, मुझे जितनी बार फेंको, उतनी बार मैं किसी नए भेस में लौट आता हूँ।

पर पहले मेरा हाल अच्छा नहीं था। लोग मुझे बाकी कूड़े के साथ एक ही डस्टबिन में डाल देते थे। नमी और गंदगी में पड़े-पड़े मैं जंग खा जाता, मेरे किनारे नुकीले और खुरदरे हो जाते। जब कचरा बीनने वाले हाथ उस ढेर में से मुझे निकालते, तो कभी कट लगता, कभी कील चुभती, और जंग लगे घाव का डर हमेशा बना रहता। जो लोग कचरे की इस पूरी कड़ी को चलाते थे, उन्हीं की सेहत सबसे ज़्यादा जोखिम में थी। ये कैसा सफ़र था, जिसमें मुझे दोबारा काम आना था, पर रास्ते में किसी को चोट पहुँचती थी? फिर कहानी ने करवट ली। पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (MoEFCC) ने ठोस कचरा प्रबंधन नियम, 2016 (Solid Waste Management Rules, 2016) लागू किए,



रीसायकल की गई metal waste से बनी नई चीज़ें

जिनमें कचरे को स्रोत पर ही अलग करने की बात साफ़ रखी गई। IPCA ने इस बात को लोगों तक पहुँचाया। सोसायटियों, घरों और सफाईकर्मियों के बीच जाकर उसने समझाया कि कचरा जहाँ पैदा होता है, वहीं उसे अलग करना ज़रूरी है।

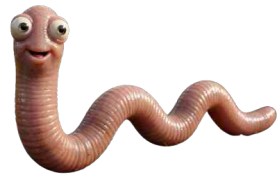
अब मैं बाकी कचरे के साथ नहीं मिलता। मुझे अलग से इकट्ठा किया जाता है, इसलिए न मुझे जंग खाने का मौका मिलता है, न किसी को मेरी वजह से चोट लगने का डर रहता है। इकट्ठा होने के बाद मैं मटेरियल रिकवरी फैसिलिटी (MRF) पहुँचता हूँ, जहाँ मुझे एक बार फिर छाँटा जाता है, लोहा अलग, एल्युमिनियम अलग, तांबा और बाकी धातुएँ अलग। वहाँ से मैं सीधे अधिकृत रीसायकलर्स के पास भेजा जाता हूँ, जहाँ मुझे नियमों के हिसाब से, सही तरीके से गलाया जाता है। मेरा सफ़र अब किसी के लिए खतरा नहीं, एक सही रास्ता बन गया है।

और अब देखिए मेरा कमाल, कभी मैं किसी पुल या इमारत का सरिया बनकर बोझ उठाता हूँ, कभी किसी गाड़ी का पुर्जा बनकर सड़क नापता हूँ, तो कभी किसी नए औज़ार या मशीन के पुर्जे में ढलकर फिर से काम पर लौट आता हूँ।





केंचुआ कारीगर की कहानी



मुझे लोग अक्सर "घिनौना" कहकर दूर भगाते हैं। मैं हूँ केंचुआ कारीगर, गोबर के अंदर चुपचाप काम करने वाला मेहनती मज़दूर। न मुझे तारीफ़ चाहिए, न इनाम, बस थोड़ा सा गोबर और थोड़ा-सा जैविक कचरा। लोग सोचते हैं गीला कचरा बस सड़ता है, बदबू करता है, मक्खियाँ बुलाता है। पर असली कहानी तो तब शुरू होती है जब वही कचरा मेरे पास आता है। मैं दिन-रात उसे खाता हूँ, और जो बाहर निकालता हूँ उसे लोग "वर्मो – कास्ट" कहते हैं, पर असल में वो काले सोने जैसी खाद होती है।

मेरी अपनी कहानी भी कहीं शुरू हुई थी IIT दिल्ली के एक कोने में, जहाँ IPCA ने पहली बार मुझे और मेरे साथियों को आजमाया। वहीं ईंटों का एक ढाँचा बनाया गया, जैविक कचरा डाला गया, और देखा गया कि हम सच में कमाल कर सकते हैं या नहीं। वो एक प्रयोग था, और जब वो सफल हुआ, तो मेरी कहानी वहीं नहीं रुकी। धीरे-धीरे मुझे नए घर मिलने लगे, कैपस से कॉलोनी तक, एक कॉलोनी से दूसरी कॉलोनी तक। पहले लोग मुझसे इतने अनजान थे कि गीला-सूखा कचरा साथ में फेंक देते, जिससे मेरा काम मुश्किल हो जाता। पर IIT दिल्ली के उस पहले प्रयोग ने रास्ता दिखाया, और फिर IPCA ने जगह-जगह वर्मिकम्पोस्टिंग पिट्स और यूनिट्स बनवाईं। लोगों को सिखाया कि रसोई का कचरा अलग रखना है और मुझे यानी केंचुओं को सही माहौल देना है। आज मैं उन्हीं गमलों में, उन्हीं खेतों में काम करता हूँ जहाँ पहले रासायनिक खाद डाली जाती थी। मेरी वजह से मिट्टी फिर से साँस लेने लगी है।







पाइप लंबू की उलझन

मैं हूँ पाइप लंबू, यानी PVC पाइप, पॉलीविनाइल क्लोराइड। नाम ही लंबू है, तो उलझनें भी लंबी होंगी! दीवारों के अंदर छुपकर, ज़मीन के नीचे दबकर मैं आपके घर तक पानी पहुँचाता हूँ। कोई मुझे देखता नहीं, पर मेरे बिना नल से एक बूँद नहीं टपकती। मेरे परिवार में और भी सदस्य हैं, जैसे बिजली के तारों का इंसुलेशन, खिड़की के फ्रेम और मेरे चचेरे भाई फ्लेक्स बैनर। हम सब बाकी प्लास्टिक भाई-बहनों से थोड़ा अलग हैं, थोड़े जटिल, थोड़े नाजुक मिज़ाज, क्योंकि हमें सँभालने का तरीका भी अलग है। सालों तक चुपचाप काम करने के बाद जब मैं टूट-फूट जाता, तो प्लंबर मुझे निकालकर मलबे के साथ फेंक देता। मुझे लावारिस समझकर सबसे लापरवाह तरीके से ठिकाने लगा दिया जाता था। और सबसे बड़ी मुसीबत तब आती जब मुझे जला दिया जाता। मेरे अंदर मौजूद क्लोरीन हवा में ज़हरीली गैसों छोड़ देता, और वही "पॉल्यूटेड एयर" बन जाती जिसकी चर्चा आज हर जगह होती है। उधर मेरे चचेरे भाई फ्लेक्स बैनर का हाल भी कुछ अलग नहीं था। किसी कार्यक्रम से पहले उनकी ज़ोर-शोर से छपाई की जाती, और फिर उन्हें फेंक दिया जाता।

फिर पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (MoEFCC) ने प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016 बनाए, और मेरी क्रिस्मत की उलझी गाँठें धीरे-धीरे खुलने लगीं। नियमों ने साफ़ कहा कि प्लास्टिक को खुले में जलाना मना है, और स्थानीय निकायों की ज़िम्मेदारी तय हुई कि वे प्लास्टिक कचरा अलग करके इकट्ठा करें और उसे पंजीकृत रीसाइक्लर्स तक पहुँचाएँ। अब प्लंबर मुझे मलबे में नहीं फेंकता, मुझे अलग छँटाकर रखा जाता है। छँटाई ज़रूरी भी है, क्योंकि मेरे भीतर का क्लोरीन दूसरे प्लास्टिक की रीसाइक्लिंग बिगाड़ सकता है, इसलिए मुझे PET और HDPE जैसे भाइयों से अलग रखना पड़ता है। रीसाइक्लिंग यूनिट में मुझे साफ़ किया जाता है, श्रेड कर के दाना बनाया जाता है, पिघलाकर दोबारा ढाला जाता है, और मैं ड्रेनेज पाइप, इलेक्ट्रिकल कंड्यूट, केबल कवरींग और फ़्लोरिंग टाइल्स के रूप में लौट आता हूँ। मेरे चचेरे भाई फ्लेक्स बैनर को भी अब कचरे के ढेर की जगह नई ज़िंदगी मिलती है, बैग, तिरपाल और दूसरे टिकाऊ सामान के रूप में। मैं मुश्किल ज़रूर हूँ, पर नामुमकिन नहीं, बस मुझे सही नियमों, सही छँटाई और सही हाथों की ज़रूरत थी।



रीसाइकल किया गया PVC पाइप







पावर अभी बाकी है, मेरे दोस्त !

मैं सेल सिपाही हूँ, छोटी सी बैटरी, पर ताकत पूरी! रिमोट से लेकर घड़ी तक, टॉर्च से लेकर खिलौनों तक, हर जगह मेरी मौजूदगी है। जब तक चार्ज रहता हूँ, हर कोई मुझे चाहता है। पर जिस दिन मेरी पावर खत्म होती है, उसी दिन मुझे कूड़ेदान में फेंक दिया जाता है, बाकी सूखे कचरे के साथ, यह जाने बिना कि मेरे अंदर लेड, मरकरी, कैडमियम जैसे खतरनाक तत्व छुपे हैं, जो मिट्टी और पानी दोनों को ज़हरीला बना सकते हैं। एक टूटी हुई बैटरी सैकड़ों लीटर पानी को दूषित करने की ताकत रखती है, यह बात बहुत कम लोग जानते हैं।

फिर IPCA ने मुझे भी एक व्यवस्थित रास्ता दिखाया। EPR के तहत मुझे इकट्ठा करने की एक चेन बनाई गई, विशेष कलेक्शन पॉइंट्स तैयार किए गए। वहाँ से मुझे अधिकृत रीसाइक्लिंग यूनिट्स तक भेजा गया, जहाँ वैज्ञानिक तरीके से मुझसे धातुएं अलग निकाली गईं और बाक़ी खतरनाक हिस्सों को सुरक्षित तरीके से नष्ट किया गया।

आज वही निकाली गई धातुएं पिघलकर नई बैटरियों के अंदर फिर से जान डालती हैं, कोई रिमोट फिर चल पड़ता है, कोई घड़ी फिर टिक-टिक करने लगती है। छोटा हूँ, पर अब सही जगह पर हूँ, और यही मेरी असली ताकत है।





पत्ते-पत्ते की पुकार



हर शाम बगीचे में झाड़ू चलती है, और हम ढेर बनकर एक कोने में जमा हो जाते, सूखे पत्ते, टूटी टहनियां, कटी हुई घास, मुरझाए फूल। लोग हमें देखकर बस इतना सोचते हैं, "यह गंदगी है, हटाओ।" हमें उठाकर या तो बाहर फेंकवा दिया जाता, या कभी-कभी जल्दी छुटकारा पाने के लिए आग के हवाले कर दिया जाता, जिससे धुआं उठता और हवा और भारी हो जाती।

चूंकि हम भारी मात्रा में निकलते हैं, हमें दूर कहीं भेजना न सिर्फ महंगा पड़ता, बल्कि वक्र भी बर्बाद करता। फिर कुछ यूँ हुआ कि जिसे कचरा कहकर जलाया जाता था, उसी में बगीचे का भविष्य देखा गया। और हमें दूर भेजने की बजाय वहीं ठिकाना मिल गया। आज पार्क में ही केज कम्पोस्टिंग और वर्मीकम्पोस्टिंग के ज़रिए हमारा उपचार किया जाता है। फिर वही खाद उन्हीं क्यारियों और पेड़ों की जड़ों में लौटा दी जाती है, जहाँ से हमें कभी भगाया गया था।

जो कभी बोझ समझकर फेंके या जलाए जाते थे वही अब पेड़ों के पोषण बन गए, जो पत्ते पेड़ों से गिरे थे, वही अब पेड़ की जड़ तक लौट आये हैं।





चिकना तेल, चिकनी चुनौती



चिकनाहट मेरी पहचान है, रंग मेरा बदलता रहता है, और रसोई में मेरी अपनी एक शान है। लोग मुझे तेल कहते हैं। जब तक साफ़ रहता हूँ, रसोई का सहारा बना रहता हूँ। पर बार-बार गरम होते और तलते-तलते मैं काला, गाढ़ा और सेहत के लिए हानिकारक हो जाता हूँ। तब मुझे "यूज़्ड ऑयल" कहकर या तो नाली में बहा दिया जाता है, या ज़मीन में डाल दिया जाता है, या फिर दोबारा किसी कढ़ाई में चढ़ा दिया जाता है।

चिकनाहट मेरी पहचान है, रंग मेरा बदलता रहता है, रसोई की शान बनकर। मुझे लोग तेल कहते हैं। रूप चाहे कोई भी हो, कहानी एक-सी है। जब तक साफ़ रहता हूँ, रसोई का सहारा होता हूँ। पर इस्तेमाल होते-होते मैं काला, गाढ़ा और ज़हरीला हो जाता हूँ, और तभी मुझे "यूज़्ड ऑयल" कहकर बेरहमी से नाली में बहा दिया जाता है, ज़मीन में डाल दिया जाता है, या दोबारा किसी कढ़ाई में चढ़ा दिया जाता है। यही मेरी सबसे बड़ी त्रासदी है, मैं दिखने में मामूली लगता हूँ, पर मिट्टी में मिलकर मैं उसकी उपजाऊ शक्ति तक छीन लेता हूँ, और रसोई में दोबारा इस्तेमाल होकर किसी की सेहत तक बिगाड़ सकता हूँ।

IPCA ने मुझे कूड़ा नहीं, संसाधन के तौर पर पहचाना। चाहे मैं किसी गैराज से निकलूँ या किसी ढाबे-रेस्टोरेंट की रसोई से, मुझे रिफ़ाइन करके दोबारा LDO (low-density oil) की तरह इस्तेमाल में लाया जा सकता है। आज देश में कई अधिकृत एजेंसियाँ और रीसायकलर हैं, जो मुझे इकट्ठा करके LDO के रूप में नई पहचान देने में कार्यरत हैं। ऐसा होने से अब मेरे सर पर नदी नाले या मिट्टी को प्रदूषित करने का जो बोझ था वो हल्का होने लगा है।



उपयोग किए गए तेल से बनाया गया LDO







टायर हीरो की तूफानी यात्रा

मैं हूँ टायर हीरो, गाड़ियों का असली हीरो! जब तक चलता हूँ, हर सफ़र मेरे बिना अधूरा है। बारिश हो, धूप हो या पहाड़ी घुमावदार रास्ते, मैं हर मौसम में साथ निभाता हूँ। पर जिस दिन मेरी ट्रेड घिस जाती है, उसी दिन मुझे "बेकार" घोषित कर दिया जाता है। फिर मेरी किस्मत में क्या लिखा होता है? कभी सड़क किनारे ढेर बनकर पड़े रहना, कभी खुले में जला दिया जाना, जिससे काला ज़हरीला धुआं निकलता, जो हवा को और मुझे दोनों को बदनाम करता। मुझे याद है, बारिश के मौसम में मुझमें पानी भर जाता और मैं मच्छरों का अड्डा बन जाता था। लोग मुझसे डरने लगे थे।

फिर सरकार की एक नीति ने मेरी किस्मत पलट दी। पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (MoEFCC) ने 2022 में पुराने टायरों के लिए Extended Producer Responsibility (EPR) लागू की, जिसके बाद टायर बनाने और आयात करने वालों पर मुझ जैसे घिसे टायरों को रीसाइकल कराने की ज़िम्मेदारी आ गई। इसी वजह से मैं सड़क किनारे के ढेर में पड़ा नहीं रहा, मुझे उठाया गया और IPCA के MRF तक पहुँचाया गया। वहाँ से मुझे अधिकृत रीसाइक्लिंग यूनिट्स तक भेजा गया, जहाँ मुझे टुकड़ों में काटा गया, रबर क्रम्ब में बदला गया। इस बदलाव के लिए मैं सरकार की इस नीति का दिल से आभारी हूँ।

आज मैं सड़क के डामर में मिलकर उसे मज़बूत बनाता हूँ, कभी पार्कों के फ्लोरिंग मैट में नज़र आता हूँ, तो कभी बच्चों के झूलों में। जो टायर कभी लावारिस पड़ा घिसता था, आज वो हर जगह घूम-घूमकर काम आ रहा है, बस अब पहियों पर नहीं, नए रूपों में!







सिरिज साहब की सतर्कता



अस्पताल के हर कोने में एक खामोश खतरा घूमता है, वो हूँ मैं। लोग मुझे सिरिज साहब कहते हैं, पर मेरे साथ मेरा पूरा क्राफ़िला भी चलता है: दस्ताने, बैंडेज, दवाओं की शीशियाँ, इस्तेमाल की गई सुइयाँ। हम अस्पतालों, क्लीनिकों और लैब्स से निकलते हैं, और अगर हमें ज़रा भी लापरवाही से छोड़ दिया जाए, तो हम आम कचरे से कहीं ज़्यादा खतरनाक साबित होते हैं। कोविड के दिन मुझे आज भी याद हैं। मेरी तादाद अचानक कई गुना बढ़ गई थी, मास्क, दस्ताने, टेस्ट किट्स की भरमार। अगर उस वक़्त हमें आम कचरे में मिला दिया जाता, तो सफ़ाईकर्मियों से लेकर आम लोगों तक, हर किसी की जान दांव पर होती।

मुझे रीसाइकल होकर नया रूप नहीं पाना, मुझे तो बस मिटना है, पूरी तरह, सुरक्षित तरीके से। पीले, लाल, सफ़ेद, नीले बिन में बंटकर मैं आम कचरे से अलग रहता हूँ, और यहीं से मेरी असली कहानी शुरू होती है, और यह किसी और वेस्ट की कहानी जैसी नहीं। पीले, लाल, सफ़ेद और नीले बिन में अलग होने के बाद मेरा डिसइन्फेक्शन होता है, प्लास्टिक और काँच को ऑटोक्लेविंग या माइक्रोवेविंग जैसे ट्रीटमेंट से कीटाणु-मुक्त किया जाता है। फिर प्लास्टिक को श्रेड करके छोटे टुकड़ों में बदला जाता है और प्रोसेस किए गए काँच के साथ रजिस्टर्ड रीसाइक्लिंग सेंटर भेज दिया जाता है।

पर यह मेरी हार नहीं, मेरी जीत है। मैं बीमार लोगों के संपर्क में आकर खुद दूषित होता हूँ, पर मेरी वजह से अब कोई और दूषित नहीं होगा। मेरी कहानी तो खाक होकर ही सफल होती है। मैं खतरा था, यह मानता हूँ, पर सही देखभाल के साथ, मैं जान लेने का नहीं, जान बचाने का ज़रिया बन गया।







मिस्टर टेट्रा का रीसाइकल्ड चेहरा

नमस्कार! मैं हूँ मिस्टर टेट्रा, स्टोर की शेल्फ का शहजादा! चमचमाता, सुरक्षित और मज़बूत, जब मैं कतार में सजकर खड़ा होता था, तो लगता था जैसे किसी स्टार की एंट्री हुई हो। लोग मुझे बड़े गर्व से चुनते और ट्रॉली में सजा लेते। घर पहुँचते ही बच्चों की आँखों में जो चमक आती, उसे देखकर मैं फूला नहीं समाता था। आखिर मेरे अंदर ताज़े दूध की शुद्धता और रसीले जूस की मिठास जो भरी थी!

पर अफ़सोस, यह सारा प्यार मेरे लिए नहीं, मेरे अंदर भरे जूस के लिए था, लोगों ने जूस पिया और मुझे सड़क पर पटक दिया। धूप में जलते और बारिश में भीगते हुए मैं अक्सर सोचता, “क्या मुझे बस इसी गंदगी में सड़कर खत्म हो जाना है?”

तभी मेरी ज़िंदगी में IPCA की एंट्री हुई, बिल्कुल किसी हीरो की तरह! Tetra Pak India Pvt. Ltd. की मदद से उसने सोसायटियों में और सफ़ाईकर्मियों के पास जाकर लोगों को मुझे अलग से इकट्ठा करने के लिए जागरूक किया और समझाया कि मैं कचरा नहीं, बल्कि एक कीमती ‘संसाधन’ हूँ। वही लोग जिन्होंने मुझे ठुकरा दिया था, अब मुझे प्यार से एक अलग बिन में जमा करने लगे।

मैं 75% वर्जिन पेपर से बना हूँ, इसलिए मुझे रीसायकल करके उच्चतम क्वालिटी का पेपर बनाया जा सकता है। मेरे बचे हुए प्लास्टिक और एल्युमिनियम वाले हिस्से को भी रीसायकल करके प्लास्टिक कम्प्रेस्ड बोर्ड बनाया जा सकता है।

साल 2009 में IPCA ने Tetra Pak India Pvt. Ltd. के साथ मिलकर मेरी सप्लाई चेन बनाने में मेरी बहुत मदद की और मेरे लिए रीसायकलर्स ढूँढे। आज मैं बहुत खुश हूँ, क्योंकि मेरा पुनर्जन्म हो चुका है। मैं अब कोई लावारिस कचरा नहीं, बल्कि एक खूबसूरत रीसाइकल्ड फर्नीचर का हिस्सा बनकर स्कूल में बच्चों के बैठने, पार्क और कैफ़े में लोगों के बैठने के काम आ रहा हूँ। मेरे अंदर ताज़े दूध की शुद्धता और रसीले जूस की मिठास भले ही खत्म हो गई हो, पर मेरी उपयोगिता आज भी ज़िंदा है।







टिफिन वाले प्लास्टिक की चमकी क्रिस्मत

टिफिन वाले प्लास्टिक की कीमत तुम क्या जानो रमेश बाबू, मेरी कीमत तो IPCA ने पहचानी, वही हूँ जो टिफिन बॉक्स बनकर आपका पेट भरता हूँ, दोपहर में दही की कटोरी बनकर ठंडक पहुँचाता हूँ, और शाम को आइसक्रीम का डब्बा बनकर आपकी खुशी बढ़ाता हूँ। मेरी हिम्मत देखिए, गर्मी सहने में मैं माहिर हूँ, इसलिए माइक्रोवेव में भी बिना घबराए चला जाता हूँ। सबका पेट भरा, सबको खुश रखा, पर बदले में मुझे क्या मिला? "यूज़ एंड थ्रो" का तमगा! एक बार इस्तेमाल किया और सीधा कूड़ेदान में।



सबसे ज़्यादा दुख तो तब होता था जब मुझमें बचा हुआ खाना सड़ जाता। सब्जी सड़ी, और बदनाम हुई मैं! "छी, कितना गंदा डब्बा है!" कहकर सबसे पहले मुझे ही फेंका जाता।

फिर एक दिन IPCA वाले आए और बोले, "डब्बा भैया को इस्तेमाल के बाद धोकर सूखे कचरे में डालिए, गीले कचरे के साथ मत मिलाइए।" पहली बार किसी ने मेरे बारे में सोचा था! मुझे इकट्ठा करके अधिकृत recyclers के पास भेजा गया। वहाँ मुझे साफ़ करके नए दानों में ढाला गया, और यही दाने आज बाल्टी, मग, फ़र्नीचर के पुर्जे और यहाँ तक कि ऑटो पार्ट्स बन रहे हैं। सोचिए, जो कभी कूड़े में पड़ी थी, आज वही गाड़ी के अंदर बैठकर सड़कों पर दौड़ रही है! अब मैं सिर्फ़ एक बार इस्तेमाल होकर ख़त्म हो जाने वाली चीज़ नहीं रहा। रीसाइक्लिंग के बाद मैं बार-बार एक नए रूप और नई भूमिका में वापस आ सकता हूँ।







चुलबुली पब्बी की उड़ान

नमस्ते जी! मैं हूँ चुलबुली पन्नी।

पहले मैं बहुत दुबली-पतली हुआ करती थी। हल्की इतनी कि लोग मुझे कहीं भी फेंक देते, और मैं हवा के साथ उड़ती हुई नालियों में अटकती, पेड़ों पर लटकती और कभी बेचारे पशु-पक्षियों के गले तक जा पहुँचती। मेरी वजह से पर्यावरण प्रदूषित हो रहा था, पर गलती मेरी कहाँ थी? गलती तो उस लापरवाही की थी, जो मुझे इस्तेमाल करके भूल जाती थी।

फिर आईपीसीए पर्यावरण को बचाने के लिए मैदान में उतरी। प्लास्टिक एक्सचेंज प्रोग्राम, प्लास्टिक लाओ थैला पाओ जैसे अभियानों के तहत उसने लोगों को समझाया कि मेरी जगह वे बेहतर विकल्प अपना सकते हैं, जैसे कपड़े का थैला और जूट का बैग। कई लोगों के हाथों में उसने कपड़े के थैले थमाए भी।



मेरे बड़े भाई 'मजबूत जूट जी' और प्यारी दीदी 'कोमल कॉटन' बरसों से यही काम चुपचाप करते आ रहे थे। बस किसी को उनकी याद दिलानी थी।

सच बताऊँ, तो मैं आसानी से आ जाती हूँ, मगर आसानी से जाती नहीं। एक बार किसी के हाथ में आ गई, तो मिट्टी में, नालों में, नदियों में बरसों-बरस पड़ी रह जाती हूँ। पर मैं इतनी भी स्वार्थी नहीं कि अपने लिए धरती माँ को नुकसान पहुँचाऊँ।

इसीलिए आज मैं खुद कहती हूँ: मेरी जीत इसी में है कि मुझे इस्तेमाल ही न किया जाए। अगली बार बाज़ार जाओ, तो घर से थैला लेकर निकलना। पर्यावरण का सच्चा हीरो बनना है, तो मेरे इन जूट और कपड़े वाले भाई-बहनों को ही गले लगाओ।







डब्बा भैया की दूसरी पारी

“खाली डब्बा, खाली बोतल ले ले मेरे यार, खाली से मत नफरत करना, खाली सब संसार” मैं हूँ डब्बा भैया, शैम्पू, तेल, डिटर्जेंट और दूध की उन सख्त, गठीली बोतलों में से एक, जिन्हें लोग HDPE के नाम से जानते हैं। प्लास्टिक परिवार का मैं वो पहलवान हूँ जो न जल्दी टूटता है, न जल्दी झुकता है। मोटा हूँ, मज़बूत हूँ, और आत्मविश्वास? वो तो कूट-कूटकर भरा है, क्योंकि मुझे पता है कि मेरी वैल्यू है! पर वैल्यू का क्या फ़ायदा, जब कट्टर करने वाला कोई न हो? लोग मेरी आखिरी बूँद तक निचोड़ लेते थे। शैम्पू की आखिरी बूँद के लिए तो मुझे उल्टा खड़ा करके ऐसे ठोकते, जैसे कोई कर्ज़ वसूल रहा हो। और जैसे ही काम निकला, ढक्कन बंद और सीधा कूड़ेदान में! “अरे, खाली बोतल है, अब इसका क्या करना?” यह सुनकर मैं, जो कभी झुकता नहीं था, अंदर से पिचक गया। पहली पारी में मैं 'खाली' होकर पवेलियन लौट गया था।

फिर एक दिन मेरी किस्मत ने पलटी मारी। IPCA ने Kia India के सहयोग से मुझे इकट्ठा करने के लिए जगह-जगह कम्युनिटी बिन लगाए। इसके बाद IPCA की कलेक्शन वैन मेरी गली में आई। मुझे बाकी सूखे कचरे से अलग छाँटा गया। यक़ीन मानिए, भीड़ में किसी ने मुझे पहचाना, तो आँखें भर आई (वैसे भी मैं तो पहले से खाली था, भरने का मौका मिला)। वहाँ से मुझे Material Recovery Facility (MRF) ले जाया गया, जिसे मैं अपना 'स्पा' कहता हूँ, क्योंकि वहाँ मुझे साफ़ किया गया। फिर मुझे मेरे जैसे भाइयों के साथ इकट्ठा करके अधिकृत recyclers के पास भेजा गया। वहाँ टुकड़ों में कटना पड़ा (थोड़ा दर्द तो हुआ, पर बिना दर्द के कोई glow up होता है क्या?) और फिर पिघलकर मैं नए दानों में बदल गया। पुरानी शक्ल गई, पर मेरी ताक़त वैसी की वैसी रही! आज मैं सिर्फ़ एक बेकार बोतल नहीं रहा। कभी गार्डन पाइप बनकर पौधों की प्यास बुझाता हूँ, कभी बच्चों का खिलौना बनकर उनके हाथों में खेलखिलाता हूँ। कभी बाल्टी और मग बनकर आपके घर के आँगन और बाथरूम में पहुँच जाता हूँ, तो कभी क्रेट और डस्टबिन बनकर फिर से सफ़ाई के काम में जुट जाता हूँ। अब मुझे पता है कि मेरी दूसरी पारी शुरू हो चुकी है, और इस बार कप्तान IPCA है।







मलबे चाचा की मरम्मत

शहर में हर इमारत की उम्र होती है: बनने की, बरसों टिके रहने की, और आखिर में गिर जाने की। उस आखिरी पल का गवाह मैं होता हूँ। लोग मुझे मलबे चाचा कहते हैं, शहर का सबसे बूढ़ा किस्सा, पर सबसे कम सुना जाने वाला। हर इमारत की नींव में मेरा जन्म होता है, ईंट-सीमेंट-पत्थर-सरिये के टुकड़ों में, और हर इमारत की मौत पर मैं फिर लौट आता हूँ, इस बार ढेर बनकर। मैंने सैकड़ों घर बनते देखे, और उतने ही टूटते भी, फिर भी मुझसे कोई मेरी उम्र नहीं पूछता।

पूछे भी क्यों? मैं तो बस "मलबा" हूँ, वो जिसे रात के अंधेरे में ट्रक भरकर किसी वीरान प्लॉट पर, या चुपचाप नदी किनारे उतार दिया जाता है। कोई हिसाब नहीं, कोई पता नहीं। मैं वहाँ बैठा शहर की हवा में धूल घोलता रहता हूँ, जैसे कोई बुजुर्ग गुमनामी में अपनी कहानी भूलता जा रहा हो।

जैसे किसी बुजुर्ग को सहारे की लाठी मिल जाए, वैसे ही पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (MoEFCC) के निर्माण एवं विध्वंस अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016 मेरा सहारा बने। इन नियमों ने मुझे ठिकाने लगाने की चीज़ नहीं, सँभालने की ज़िम्मेदारी माना। फिर तो मुझे कंक्रीट के टुकड़ों से छानकर अलग किया जाने लगा और कूड़ा समाज के सबसे चर्चित सदस्य, प्लास्टिक वेस्ट, के साथ मिलाया गया, जैसे दो अनजान किरदार एक ही कहानी में जोड़े जा रहे हों। इस मेल से बना पेवर ब्लॉक, ईंट, जो आज इमारतों और गलियों की बाहरी फ़र्शबंदी (exterior flooring) में बिछता है। जो कभी शहर के एक कोने में ढेर बनकर बैठा था, आज वही मैं देश के अलग-अलग हिस्सों में ट्रक-दर-ट्रक पहुँचाया जाता हूँ। आज मैं सड़क की नींव में दबा हूँ, किसी नए ब्लॉक की दीवार में जमा हूँ, किसी पेवर टाइल पर लोगों के कदमों तले बिछा हूँ। कोई मुझे पहचानता नहीं, पर हर कदम मुझ पर से होकर गुज़रता है। टूटना मेरा अंत नहीं था, बस अगली कहानी की शुरुआत थी।



निर्माण एवं विध्वंस कचरे से रीसाइकल किए गए पेवर ब्लॉक्स





सशक्त सफाईकर्मी समृद्ध भारत



